Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Vaj D 1

13. C. 5

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Rasalīlā.

Ras Lila

रासलीला ॥

जिसमें ।

प्रेमरसामृत दायकाघनाशक श्रीकृष्णचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर का श्रीराधा ललिता आदि गोपियों के साथ रासविहार व अन्तर्द्धान होकर प्रकटहोने का वृत्तान्त अति ललित शब्द पूरित दोहा चौपाई आदि रम्य सुछन्दों में वर्णित है ॥

जिसको ।

जिला लखनऊ मोहनलाल गञ्ज प्रदेशान्तर्गत मऊ ग्राम निवासि पण्डित द्वारकाप्रसाद बाजपेयि ने निर्मित किया ॥

वही

बदरका निवासि पण्डित वासुदेव शुक्ल के प्रबन्ध से

स्थान लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छापीगई ॥

अप्रैल सन् १८८० ई०

श्रीगणेशायनमः ॥

रासलीला

बन्दना

दो० प्रथमबन्दिगणपतिचरण विष्णुमहेशहिंध्याय ॥
भानु देवि रच्छा करहु विनवौं शीशनवाय ॥
ऋषि अट्ठासीसहस अरु देव कोटि तैंतीश ॥
लीलाराहसकोरचौं तवचरणनधरिशीश ॥
बन्दौंचरणसरोजगुरुजिनदीन्ह्योमोहिंज्ञान ॥
तिनकी कृपाकटाच्छ सो लीलारास बखान ॥
जिमिमनमोहनरासहितबन्शीध्वनिबनकीन ॥
तिमिबरणौं गुरुध्यानधरि रास नृत्यरसभीन ॥
पुनि गोपिन के मध्य ते जस भे अन्तर्द्धान ॥
आयमिलेपुनिगोपिकन कहिहौंसोइबखान ॥

चिन्तना करना गोपियोंका रासकरनेको ॥

जबते गोपिनचीर हरि कान्हैकियो करार ॥
क्वारशुदी पूनो शरद करिहौं रासविहार ॥

चौपाई ।

तबतेचरचैंनिशिदिनआली । कहैंकिवहदिन कबहैआली ॥
रासकरैं जब हरिकेसङ्गा । सुफलहोहिं निजनिजसबअङ्गा ॥
यहिविधिआशकरैंब्रजबाला।कबमिलिहैंमोहिंनंदकेलाला॥
तबसबहिलिमिलिगोपकुमारी । लैसँगनचिहैंकृष्णमुरारी ॥
कछुकदिवसयहिबिधिगेबीती । गोपीकरतकृष्णपरप्रीती ॥

श्रीकृष्ण को रासहेत गोपियोंको बनमें बुलाना ॥

क्वारमासपूनो जब आई । तब मनमोहन कुँवरकन्हाई ॥

अपनेमन असकीन्हविचारा। गोपिनसे जो कीन्हकरारा ॥
सो रांडस अबकरिये भाई। गोपिन की सबसाध पुराई ॥
अंगअंगपर साजि अभूषण। विपिनमांभगे दोषहिंदूषण ॥
घटाटोप इच्छन हरियारी। षोड़षकला चन्द्र उजियारी ॥
शीतल मन्द सुगन्ध समीरा। लहरलेत यमुनाकर नीरा ॥
तहँ बन्शीकी टेर सुनाईं। सुनतैं ब्रजयुवती उठिधाईं ॥
चलींत्यागिसुतपितुअरुमाता। एक एक सन कहैं न बाता ॥
जिनजिननामबजायोबंशी। तेसबचलींचालजिमिहंसी ॥
पावससरिता जिमि सब धाईं। सागरमिलन बेगते जाईं ॥
तिमिसबगोपीहरिरँगराती ॥ मिलनकृष्णधाईंमदमाती ॥
देखो प्रीतिरीतिअसि प्यारी। गोपिनवश्यअखिलखबनवारी ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

जब वश्य गोपिन के भये तब जाय बन के माँझ में।
तहँ टेर सब ब्रजनागरिन को करत बंशीनाद में ॥
बंशी सुनत ब्रजबाल सब नँदलालके ढिग आवहीं।
खान पान बिसारि युवती गहनकी दिशिधावहीं ॥
जो परसियालीकरतिभोजन छांड़िढालीसोचली।
तजितातमातसुतादिस्वामिबिसारिकृष्णौआमिली ॥
जो दुहतग्वालिनि बच्छ बांधे धेनु कर लै दोहनी।
त्यहिकूटिदोहनिगिरीकरतेंउठिचलीमृगलोचनी ॥
कोइमांग सेंदुर भरत अपने लिहे दर्पण हाथ में।
सोडारि करते मुकुरचलि विन आइदीन्हेंमाथ में ॥
जो देति कज्जलआँखिके बिच एकआँखि मेंन दई।
सो गई बनिता तहां प्रभु जहँ रास की लीला ठई ॥
जो नग्नबाला करति पिय सँगभोग गृहबिच सेजपर।
सो नग्नधाई बसन लीन्हे जाय पहुँची रास पर ॥
कोइ पय पियावत तजैंबालक करत भोजनतातको।
नहिंकहैंबात न तातपूंछैं लेहिंनहिंकोइसाथको ॥
कोइ चरणभूषण पहिरि हाथन करणभूषणचरणमें।
कोइ ओढ़िसारी पहिरि चादर कंचुकी लैहाथमें ॥

यहिभांति बाला प्रेमबश गईं सघनजहँ राहसरच्यो।
जहँ लता द्रुम बहु सघनफूलेदेवगण आनँदमच्यो॥

दो० यहिविधितेब्रजनारिसब गईं जहांनँदनन्द।
देखिदरश यदुनाथके उमग्योमनआनन्द॥

श्रीकृष्ण और गोपियोंकी परस्पर वार्त्ता॥

चौपाई।

देखिसकलब्रजगोपलोगाई। तिनतनदेखि कह्योयदुराई॥
सासुससुरसुतपतितुमत्यागी।मोढिगआइउतुमनिशिभागी॥
युवतिन धर्म पतिब्रत चहई। नारिप्रभावजाहिनिस्तरई॥
त्यहिते शीघ्रहि जाउ पराई। नाहिंत तुम्हरो धर्मनशाई॥
कैसो पति अवगुणयुत होई। अन्ध लूल कुष्टी बहुसोई॥
लम्पट कपटी परत्रियगामी। जानैत्रिय परमेश्वर स्वामी॥
अपरपुरुष ते जो अनुरागै। श्रुतिकहै ताहि दोषबहुलागै॥
तब गोपी बोलीं यहबानी। सुनोनाथ प्रभु सबसुखदानी॥
लोकलाज कुलकानिउ त्यागी। तुम्हरेचरणभईं अनुरागी॥
जेहितलागिऋषीश्वरध्यावैं। नेतिनेतिकहिश्रुतिनितगावैं॥
सोसुखरूपहमदेखैंनितहीं। त्यहितजिकहोकाहिअबभजहीं॥
तनमनधन तुमपर हमवारा। तुम्हरेचरण ध्यान हमधारा॥
हमरे तुम्हीं प्राणपति देवा। हम नहिं जानैं दूसरभेवा॥
मन क्रम बचन तुम्हारी दासी। अंतर्यामी घट घट वासी॥
दरश तुम्हारे हम सब आईं। मम इच्छापुरवो यदुराई॥
धरौधीर निजमन ब्रजनारी। तुम्हैंलागि हम नरतनधारी॥
करिकैप्रीति अप्रीतिदुराई। निजमायाको टेरिबोलाई॥
मायाते असकह्यउगोपाला। रचो एकमन्दिर ततकाला॥
सकल अभूषण पट युत नाना। ताके बीचधरोतुम आना॥
सोमाया हरिप्रेरित आई। राहस मन्दिररच्यउ बनाई॥
तामें पटभूषण बहु नाना। बाजन धरे अनेक विधाना॥
सोसबपहिरैंगोपकुमारी। निजनिजमनसबहोहिंसुखारी॥
सजैं साज सब निजनिज अंगा। उठै प्रेममन रंग तरंगा॥

शोभा साज कहौं का गाई । जो गोपिनराख्यो सुख पाई ॥
करि श्रृङ्गार सबै ब्रजनारी । रासकरन हित करैंतयारी ॥
केशखोलि आगे धरिऐना । माँग सँवारि कहैं पिकबैना ॥
पहिरौवेगि अभूषणभारी । करिश्रृंगारमिलोगिरिधारी ॥
चोटीगुंथि पीठि लटकाई । मानोंनागिनि रहिलपटाई ॥
कर्णफूल कानन में सोहैं । झुमका झूमिझूमि मनमोहैं ॥
बँदियाअरुकटियाशिरसोहैं । देखतछविसुरनारिविमोहैं ॥
भालबीच सोहै शुभबिन्दा । जनु तारनबिच सोहै चन्दा ॥
नकबेसरिछविहैअतिनीकीलटकनभालकइलकछविजीकी॥
परी पचलरी और हमेलैं । उर बिच तैंता करैं कलोलैं ॥

दो० पट्टी यन्त भुजन पर बाजू बाँक बहार ॥
रतनजटितककनाचुरी टाड़ैवकरमनहार ॥

चौपाई ।

कारी पेरी और हरेरी । बाँहन में सोहैं भल चूरी ॥
ता बिच छन्न पछेला पाछे । कंगन आगे हैं बहु आछे ॥
पहुँचीपहिरिनिगुरहीभारी । पहिरिसबहोहिंसुखारी ॥
छापैं छल्ला आँगुरताना । देखि आरसी चाँद लोभाना ॥
पोरपोरपरमुँदरीसोहीं । निजकरगोपिनअँगुरिनपोहीं ॥
पायजेब सब पहिरिबधूटी । कड़नछड़न झाँझन मनलूटी ॥
घुँघुरुनकी झनकारस्वहाई । श्रवणपरत को कान लोभाई ॥
धरतपाँवजहँउठझनकारा । देखत रूप रतिहु मनहारा ॥

दो० नखशिखअङ्गसवाँरिसब राधानन्दकुमार ।
एकरूपके बहुकियो गोपिन प्राणअधार ॥
जितनीब्रजकीगोपिका तितनेरूपबनाय ।
एकएकके बिचभये मोहन कुंवरकन्हाय ॥
ताहिमध्यशोभितभये राधानन्दकुमार ।
देखिरूपसुरगणछके गर्व्व दूरि भयोमार ॥

चौपाई ।

करनदूरि मनसिज कर गर्वा । अस आनन्दकरत सुरसर्वा

बहुस रच्यो ब्रजकुंवरकन्हाई। सकलविश्वजीवनसुखदाई॥
ब्रजयुवतिनके संग बिराज्यो। सोरासहस गोपिकनराज्यो॥

श्रीकृष्णजीकेसंग गोपियों का रासकरना॥

हरिगीतिका छन्द॥

सोरह सहस ब्रज गोपिका सजि साज सब ठाढ़ीभईं।
सब अंग अंग सँवारि भूषण कृष्ण युत आनँद भईं॥
शशिवदनि चम्पकबरनि कुच श्रीफलनि केसमसोहईं।
मृगनयनिकोकिलबयनि सबगुणअयनिमुनिमनमोहईं॥
सब अंगअंग सवाँरि बिधना जिन्हैं निज हाथनरच्यो।
ते बाल हरिके संग बिहरैं रास में हरि सँग नच्यो॥
बाजैं मृदंग मुचंग झांझ सरंगि शब्द सु मोहई।
जहंउठत तालमृदंग धाकिट झकिट धुंधुकधामई॥
नाचतविबिधिगतिगोपिका तततायेईतततायेई।
निरखिछबिब्रजनारिनिजमन कहतिधन्यधनि २ भई॥
कोइछीनिमुरलीकान्हसे निजअधरमें धरिगावती।
करतालदै कोइश्यामसन्मुख गायगाय रिझावती॥
कोइनचतनाचत श्रमितह्वै गलबांहहरिकेडारहीं।
कोइप्रेमअमृत पानकरि हरिबदनओर निहारहीं॥

दो० राहसशोभाकृष्णकी कोकरिसकैबखान।
वर्णतशारदमतियकी मैंबपुरोकागान॥

चौपाई।

श्रमितभईं व्रजगोपकुमारी। भीजिप्रस्वेद गये पटसारी॥
उलझि अभूषण बेणी माना। बन्दी आदि केश लपटाना॥
तिहिहरिनिजहाथनसुलझावें। गोपिनऊपरचमरढुलावें॥
नभबिमान देखैं सुरहर्षैं। बधुन समेत पुष्प बहुबर्षैं॥
सुरन वधू बिनवैं हरिपाहीं। होयजन्म समब्रजके माहीं॥
दासीहोंइ गोपिकन केरी। नयन सुफलहवैहैं हरिहेरी॥

दो० ब्रजयुवतिनअभिमानभो कान्हकरतसमसेव।
अन्तर्यामी आपहरि जानिगये यहभेव॥

श्रीकृष्णजीका अन्तर्द्धानहोना ॥

निशाघोर गंभीरवन ताहिबीच यदुनाथ ।
अन्तर्द्धान भयेहरी सबकोछोड़ि अनाथ ॥
भवचकभईं ब्रजनागरी जबनदीखनँदनन्द ।
बिनदेखे यदुनाथके भयोदुःख अतिद्वन्द ॥
राससमय की गोपिका शोचैं बैठीरैन ।
मोसँगबिहरेसकलनिधि कहाँगयेसुखदैन ॥
मोहिंछोड़िकेकुमारिके बिहरतसँगगिरिधारि ।
ब्रजगोपिन केचित्तमें आवत यहीबिचारि ॥

चौपाई ॥

निज २ मनसबकरैंबिचारा । मोहिछोड़िगयेनन्दकुमारा ॥
मोहिंकुरूपमानिघनश्यामा । छोड़िगयेयहकहैंब्रजबामा ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

सबबामयहअनुमानकरि ममध्यानयहआवतसही ।
मोहिंसोइजानिकुरूपमानि मुरारिछांड़िगयेकही ॥
यहिभांतिबनितासकलदुखिता बैठिमनमेंशोचहीं ।
यक गोपदुहिताबोलिउठिता श्याम श्यामाहैनहीं ॥
सबकहतिबालाहै बिशालानन्दलाला कहँगये ।
गलबाँहडारि पियारकारि दिदारिदैमनहरलये ॥
चलियेअलीअबयहिगली सबहिलिमिलीकछुंढूढ़िये ।
कोउमिलैराहीपूछिताही श्यामपाहींजाइये ॥
यहिभांतिनागरिपूछिउागरि रूपआगरिढूढ़हीं ।
जड़चेतनातरुचन्दना करजोरितुमसनपूछहीं ॥
हेअम्बनिम्बकदम्बपाकरि हरणहमरेपीरको ।
हे जम्बुनिम्बुपलासइचौ दीखकछुंयदुबीरको ॥
हे मालतीतुमजानतीहौ नन्दनन्दनकान्हको ।
स्वहिंजानिचेरीकरिनिहोरी स्वहिंबताओश्यामको ॥
हमपूछहारीसकलनारी बिरहमारीहैंखड़ी ।
तुमबोलतेनहिंबातहमते काहतेनहिंकछुजड़ी ॥

हे प्यारितुलसीरहतऊलसी चढ़तहरिकेमाथहीं ।
अबश्यामराधायोगसाधा छोंड़िहमरोसाथहीं ॥
हमसकलनारीढूंढ़िहारीं मिलतनहिंबनवारिहैं ।
तुमकहिबताओदुखछुड़ावोकहांवेगिरिधारिहैं ॥
हे यमुनसरिताअतिपुनीता बहतिनिर्मलनीरहौ ।
जे आयतुमपहँध्यायमनमहं देतितिनकोधीरहौ ॥
हमसकलयुवतीकरतबिनती बिनयहूतनीलीजिये ।
नँदनन्दनन्दबताय हमकहँ सुयशहूतनोकीजिये ॥

दो० हेमनमोहनसाँवरो तुम्हरीमृदुमुसकानि ।
जबसुधिआवतमोहिंको उपजतदुखकीखानि ॥
हे खिन्नी अरु फालसा कटहर बड़हर मीत ।
काजपरारि सहत हौ वर्ष घाम औ शीत ॥
हे पिप्पल औ चिंचिणी टिकुई और असीत ।
हे चम्पा महूक तरु सिरसा सब के मीत ॥

तोमरछन्द ॥

हे बदरि औ अमरूत । गुलदावदी शहतूत ॥
गुलशब्ब औ कचनार । तुमहरत दुखकोभार ॥
औदुम्बरी औ कञ्ज । तुमदेत आनंदपुञ्ज ॥
कमरख नरंगी बेल । तुमदेखते नितखेल ॥
कञ्जी कठूमरि बिम्ब । हरी बहेरा अम्ब ॥
हे सकलबन घनघोर । हमपूछतीं करजोर ॥
तुमदेखु मोहिंलखाय । कहँ बैठिहैं यदुराय ॥
यकदेखि वृक्ष अनार । कहदेखुसखि इनवार ॥
इनदीख कमलाकांत । कबहिं हँसतकाढ़ेदन्त ॥
हमपूछतीइनसोंहिं । येकहत नाकछुमोहिं ॥
हे शशाम्बानखगाल । हमसकलफिरतिबिहाल ॥
कहिंकहिसुनावोहाल । कहँबैठिहैंनँदलाल ॥
हे कच्छशूकरकीश । हमतुमहिं देतअशीश ॥
तुमश्यामश्यामापाहिं । लैचलहुबेगि अबाहिं ॥
हे लवालागसमोर । हे सबन कोयल धीर ॥

प्यारे पपीहा जीव। तुमकरत नितपिवपीव॥
बिछुड़े हमारे पीव। नहिंमिलैं करुणासींव॥
हे शुकावाजश्यान। तुम कहौबेगि बखान॥
हमढूंढ़तीनँदनन्द। नहिं पावती ब्रज चन्द॥
कोउदेतनाहिंलखाय। हमढूंढ़ती यदुराय॥

दो॰ चालढुसुकुनीतूम्हरी औरचटकनी बात।
नैनमटकनी यादकरि धीरजनाहिंधरात॥
तिरछीचितवनिसाँवली मूरतिकीबलिहारि।
बेगिआयदर्शनदियऊ तनमनडारौं वारि॥
हे पशुपच्छी सघनबन सरसरिता जड़चेत।
हमपूछततुमसबनते बोलतनहिंक्यहिहेत॥
याहिभांतिब्रजनागरी पूछतिहैंचहुँओर।
ताहिसमययकभामिनी बोलिउठीवहिठौर॥
देखौ बैठीहैं अली श्रीवृषभान दुलारि।
जिनकोलाये साँवरोहमरीसुरतिबिसारि॥

गोपियोंको राधाजीका मिलना॥

चौपाई।

सुनत वाहिके बैनरसाला। राधा निकट गईं सबबाला॥
हमैंछोड़ि हरि ल्यालैआई। यहनकीन कुछुबात भलाई॥
अबकहुकृष्णगयेहैंकितहीं। जिनकेबिरह दुखीहमफिरहीं॥
तबबोलीं राधा करजोरी। सुनहुसखी ममबिनती थोरी॥
प्रेमबढ़ाय मोहिं अपनाये। यहि काननके बीच लयाये॥
जबमैंथकीचलत मगमाहीं। तबअस बोलिउठे वहिठाहीं॥
काह्मनबेगि चलौमम प्यारी। तुमसन प्रीतिकीन हमभारी॥
मैंबोली उनसन करजोरी। सुनहुनाथ ममबिनती थोरी॥
कोमलपदछितिपरमकठोरा। तेहिपरचलतहोतदुखघोरा॥
अमितभईउंपरिगे पगछाला। महाराजअबभईउं बिहाला॥
कहाकृष्ण चढ़िये ममकन्धे। हमलैचलब प्रीतिकेबन्धे॥
हमरेउमन यहबात समाई। चढ़नहेत उनलग नियराई॥

कन्धारूढ़ होनजब लागी। तबहि सङ्ग उनहमरौ त्यागी॥
तबतेमैं सोचतिहौं आली। अबवै कहांमिलैं बनमाली॥
सखिनङ्ग ते छूटासँगमेरा। पड़ादुःख अबकठिन घनेरा॥
सोअबमिलिउ आयकै तुमहूं। आज्ञादेऊ करैंतस हमहूं॥
दो० राधाकेसुनिकैबचन सखिनबच्यउ बहुसोच।
अबकहँजावैंढूंढ़ने जहांमिलैंदुखमोच॥

गोपियोंका श्रीकृष्णजीकी लीलाकरना॥

चौपाई॥

बोलिउठी यकचतुर सुजानी। सुनहुबात ममसखी सयानी॥
भक्तिबछलहैं दीनदयाला। भक्तिहि ते प्रगटत नँदलाला॥
सदाभक्ति बशहैंअसुरारी। दीनदयाल प्रणत हितकारी॥
त्यहितेयह अनुशासनसुनहू। लीला बालचरितकी करहू॥
सकलसखिनके यहमनमाना। लगींसराहन वाहिकहाना॥
बनतेचलि लैकै सँगश्यामा। यमुनानिकट गईं सबबामा॥
आयकृष्णके रासस्थाना। लीला बालचरितकी ठाना॥
नन्दपिताअरुयशुमतिमाता बनीरोहिणी अरु बलभ्राता॥
बनीएक श्रीकृष्ण गुआली। लीलाकरैं जो किय बनमाली॥
प्रथमपूतना बधकी लीला। सकटासुर मारण शुभ शीला॥
तृणावर्त राक्षस जसमारा। अघासुरहि जस कीन सँहारा॥
कालीनाग नाथि जसलीन्हा। पुष्पलाय कंसै जस दीन्हा॥
गोपिनप्रीतिकृष्णजसकीनी। सोसबकीन रुखिन रसभीनी॥
बकासुरहि जसआनन फारा। गिरिगोबर्द्धन नख जसधारा॥
चीरहरण लीलाकरी पुनिकरि कौलकरार।
वारशुदी पूनो शरद करबै रासबिहार॥

चौपाई॥

जस बंशी की टेरसुनाई। सकल गोपिका जसउठिधाईं॥
आय रास पर सब ब्रजबाला। गोपीएक बनीनँदलाला॥
करैंन्त्यसबहिलिमिलिनारी। कल्पितसंगलिहेबनवारी॥
बिबिधिभांति बाजतकरतारी। गावतसप्तसुरब्रजनारी॥

सरिगमरिपधा रुम्रसुर रागन छवो अलापि।
गावतगोपी बिबिधिबिधि कृष्णबियोग बिलापि॥

श्रीकृष्णजी का प्रकटहोना॥

सो० बश्यभये ब्रजचन्द देखीबाला प्रेमबश।
ब्रजकेआनँदकन्द प्रगटेगोपिन मध्यमहँ॥

चौपाई॥

मोरमुकुट पीताम्बर धारे। कुण्डल चपल नयन रतनारे॥
उरबैजन्तीमाल सोहाये। केसरि तिलकभाल बिचलाये॥
पीताम्बर पहिरे मनमोहैं। मुरली हाथ लिहे भलसोहैं॥
अलकनिरखिअहिकेचुलत्यागा। देखतकामरूप मदभागा॥
उदररेखचय नाभिगँभीरा। करिकरसम भुजदण्डबनीरा॥
कोटिन काम रूप छबिछाजै। देखत रूप दुःख सब भाजै॥
नेतिनेतिज्यहिस्रुतिनितगावैं।योगीज्यहिहितध्यानलगावैं॥
जो जग सृजै करै संहारा। तिनको रूप को बर्णन हारा॥
भक्तिबश्य ते गोपिनसङ्गा। लीला करत रहस रसरङ्गा॥
सोस्वरूपदेखत ब्रजनारी। शशिजिमिदेखिचकोरकुमारी॥

दो० मिलींहरिहिलपटायसब धायधायब्रजनारि।
अति रसबश मोहन भये अङ्गसङ्ग सबकारि॥

चौपाई॥

बूड़त मांझधार जिमिकोई। नौकामिलै बहुत सुखहोई॥
तिमिगोपिनहरिदेखतपावा। सोसुखशेषबरणिनहिंआवा॥
बोलिउठी ब्रजगोपकुमारी। दीनदयालप्रणतहितकारी॥
हमतुम्हरी छबिपरसबवारी। ममउरकी जानतबनवारी॥
निशाघोरघन गहनअपारा। ताबिचछोड़िदयानहिंधारा॥
हमअबलातुमसबलकन्हाई। हमतुम्हरी सरबरिनहिंलाई॥
ऐसीतुमहिंनचहियेमोहन। अबलाजानिछाँड़गुणदोषन॥
नारिनजानि आपनीदासी। करहुकृपा घटघट के बासी॥

सो० बोले कान्ह सुजान सुनौ बात मम बालअब।
भक्ति बश्य मोहिं जान सदा भक्त सङ्कटहरौं॥

चौपाई ॥

जबतुमप्रीतिकीनब्रजबाला। तबहमतुमसँगकरिबहुख्याला ॥
जब तुम्हरेमनभा अभिमाना । तब हम तुरतै कीन पयाना ॥
पुनिजबध्यानकीन्हतुममोरा। तबहम प्रगट भये तव ओरा ॥
जब जब गाढ़परै ममभक्तन । तबतब आयकरैं हम रक्षन ॥
यहिविधिक्रान्हसबनसमझावा। सोगोपिनकेमनअतिभावा॥
कहैंबाल सुनिये यदुराई । तुम्हरीगति जानी नहिं जाई ॥
मम अपराध क्षमा अब कीजै । करिकैरास हमैं सुखदीजै ॥
तुमबिनकलनहमैंक्षणएको। तुमबिनदुःखहरणहमरोको ॥
हेयदुवीरसकलगुणआगर । तुम्हरी शरण भई नटनागर ॥
तुमबिनदुखीभई ब्रजनारी । दुखीमीनजिमिहैबिनबारी ॥
करौरासहमसँगयदुवीरा । सबगुणराशि हरणदुखपीरा ॥
बिनययुक्तसुनिगोपिनबानी । उठ्यउठीब्रजकेसुखदानी ॥
चलो रासपर सब ब्रजबाला। हँसिकै बचनकह्यो नँदलाला॥
हर्षयुक्त गोपिन के संगा। रास करत मोहन रस रंगा ॥

नृत्यगति ॥

ततथा ततता तत तत ता थ्यई ताथ्यई तत तत ता थ्यई
थ्यई थेई थेई तड़कि तड़कि तुं तननन ततनन तननन ता ।

खड़ागति ॥

थ्यईत थ्यई ता थ्यईत थ्यई ता थ्यईत थ्यई ता

ताल गति ॥

धिक् धा धिक्धा धिक्धा धाकिट् धाक् धिक् धिक्धा धिक्
धिक धिक् धिक् धिकिट धिकिट् धुं धाधा धाधा धाधा धा॥

सरिगम् ॥

सासा गागा धाधा गागा धा सनि धपा धा गा मगर सां।
सानिनि सानिनि सानी धपधानी धो सासा सासा गागा
गागा धगरे धगा धा गा मगर सों ॥

चौपाई ।

नितनवलीलाकरतबिहारी। ब्रजवीथिनविहरतबनवारी॥
योगीजपततपस्वीसंन्यासी । ज्यहिमिलबेहितरहतउपासी

भक्तवत्सल खद दीनदयाला । भक्तनहेतु करतबहुख्याला ॥
तिनकीलीलासबसुखदाई । सुनत पाप सब जाइँनशाई ॥
दो॰ महारास भलकीनप्रभु गोपिन बहुसुखदीन ।
तिनकीलीलागाय करि करौपाप सबछीन ॥

चौपाई ॥

मतिअनुसार कहा हमगाई । सुनिहैं सज्जन चित्तलगाई ॥
दुष्टकुटिल करिहैं उपहासा । जेपर निन्दक रहैं उपासा ॥
लीला रास कृष्ण सुख दाई । पढ़त पाप सब जाइँ पराई ॥
छं॰ जे कृष्णराधा प्रीति पदकरि रासलीला गाइहैं ।
तेकोटिभवअघनाशकरिकै विष्णुलोकसिधारिहैं ॥
द्विजद्वारकापरसादहरिपद ध्यानधरियहगायऊ ।
ममभूल चूकसँभारिसज्जन पढ़ौसबसुख लाहऊ ॥

ग्रन्थकारकेस्थानकापता ॥

कुण्डलिया ॥

लक्ष्मणपुर के जिलामें मोहनलाल सुगञ्ज ।
काशीश्वरशिवधामजहँ बन्योसकल सुखपुञ्ज ॥
बन्योसकल सुखपुञ्ज रज्जुतहँनिकटनआवै ।
ताहिसमीपमऊ सोई मम ग्राम कहावै ॥
तहाँ द्वारका बाजपेयि बस करत ध्यानहर ।
गायो शुचिसितअष्टगुणाङ्क शशीसम्वँत् पर ॥
दो॰ राइस औड़ाकोरको द्विज द्वारकाप्रसाद ।
बुधिबलविद्या सुयशनित बढ़ैपढ़ै जे साद ॥

इति रासलीलासमाप्तम् ॥